स्वप्नवासवदत्तम् में अन्तर्द्वंद्व के दो रूप: वासवदत्ता एवं पद्मावती।

दीपश्री बंसल

स्नातक शोधार्थी, चतुर्थ वर्ष

संस्कृत विभाग

मिराण्डा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सारांश (Abstract)

भूमिका-

संस्कृत नाट्य परम्परा में स्त्री को केवल प्रेम, सौंदर्य अथवा करुणा के रूप में ही न प्रस्तुत करके, उसके व्यक्तित्व में बौद्धिक, नैतिक, मानसिक सामर्थ्य, भावनात्मक, राजनीतिक बोध आदि गुणों को भी प्रकट किया गया है। नारी के ऐसे ही उत्कृष्ट गुणों को प्रस्तुत करते हुए संस्कृत साहित्य जगत् में अनेक प्रसिद्ध कवियों द्वारा अनेक उत्कृष्ट रचनाएँ की गई हैं। इन्हीं में से एक सुप्रसिद्ध महाकवि भास हुए हैं जो जनसाधारण के मनोभावों को एवं विभिन्न परिस्थितियों में उत्पन्न होने वाले मानसिक विकारों का चित्रण बहुत कुशलतापवूक करते हैं।

"स्वप्नवासवदत्तम्" महाकवि भास द्वारा रचित एक प्रसिद्ध संस्कृत नाटक है, जिसमें राजा उदयन, वासवदत्ता और पद्मावती के माध्यम से प्रेम, त्याग तथा राजनीति के समन्वय को दर्शाया गया है। यह नाटक मानवीय भावनाओं, विशेषतः नारी मनोविज्ञान और आंतरिक संघर्षों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति करता है। स्वप्नवासवदत्तम् में नारी चित्रण बुद्धि, धैर्य, राजनीति बोध, संयम तथा आत्मसम्मान से युक्त व्यक्तित्व के रूप में प्रदर्शित है।

प्रस्ततु शोधपत्र का विषय स्वप्नवासवदत्तम् में अन्तर्द्वंद्व के दो रूप: वासवदत्ता एवं पद्मावती है जिसका उद्देश्य दोनों पात्रों के अन्तर्द्वंद्व का विश्लेषण करके, उनके मानसिक एवं बौद्धिक शक्ति को दर्शाना है कि वह दोनों किस प्रकार संयम से प्रेम, कर्तव्य तथा राज्यहित के मध्य संतुलन स्थापित करती हैं। वासवदत्ता का अन्तर्द्वंद्व उसके पति राजा उदयन के प्रति आघात प्रेम तथा राज्यहित के लिए राजा उदयन का दूसरा विवाह कराने से उत्पन्न होता है। दूसरी ओर, पद्मावती का अन्तर्द्वंद्व आत्मस्वीकृति से जुड़ा हुआ है।

शोध उद्देश्य

वासवदत्ता एवं पद्मावती नारी पात्रों के मानसिक भावों यथा- अन्तर्द्वंद्व, त्याग, आत्मसंयम आदि का अध्ययन करना इस शोध-पत्र का उद्देश्य है। दोनों पात्रों के द्वंद्व के माध्यम से स्त्री मन की सूक्ष्म अभिव्यक्ति तथा इनके मानसिक भावों से इनके व्यक्तित्व का गहन अध्ययन करना इस शोध-पत्र का उद्देश्य है।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र में वर्णात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। प्रथमतः महाकवि भास कृत स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का अध्ययन किया गया है तथा फिर वासवदत्ता एवं पद्मावती के संवादों तथा भाव प्रसंगों का मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सूक्ष्म विवेचन करके इनके अन्तर्द्वंद्व को प्रस्तुत किया गया है।

अपेक्षित परिणाम

स्वप्नवासवदत्तम् में नारी पात्रों के अन्तर्द्वंद्व के माध्यम से उनके त्याग, आत्मसंयम, बुद्धि, धैर्य, विवेक आदि से युक्त व्यक्तित्व को प्रदर्शित किया गया है। महाकवि भास कृत यह नाटक मनोभावों विशेषतः नारी मनोविज्ञान तथा आन्तरिक संघर्षों की सूक्ष्म अभिव्यक्ति करता है।

बीज शब्द

स्वप्नवासवदत्तम्, अन्तर्द्वंद्व, मनोविज्ञान, पात्र विश्लेषण।

स्वप्नवासवदत्तम् में अन्तर्द्वंद्व के दो रूप : वासवदत्ता एवं पद्मावती

संस्कृत साहित्य में प्रारम्भ से ही नारी का एक विशिष्ट स्थान रहा है जो उसे केवल सौंदर्य, गृहस्थी अथवा करुणा के रूप में ही न दिखा कर, उसे ज्ञान, नीति, मानसिक सामर्थ्यता और धर्म का आधार मानता है। वैदिक साहित्य से ही यदि देखा जाये तो ऋग्वेद में ही लोपामुद्रा, विश्ववारा, यमी, अदिति, घोषा आदि ऋषिकाएँ ज्ञान की साधिका हैं। वाल्मीकि रामायण में सीता को धैर्य, त्याग तथा आत्मसम्मान की प्रतिमूर्ती के रूप में दर्शाया गया है। संस्कृत नाट्यपरम्परा की चर्चा की जाये तो इसमें नारी का स्वरूप अत्यन्त व्यापक, बहुआयामी एवं प्रभावशाली रहा है। ऐसे अनेक महान् प्रसिद्ध नाटककार हुए हैं जिन्होंने अपनी कृतियों में नारी पात्रों के माध्यम से उनकी संवेदनशीलता एवं विवेकशीलता को विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया है। इन पात्रों के माध्यम से नारी के प्रेम, व्यवहार, मानसिक स्थिति करुणा, त्याग, विवेक आदि मानवीय गुणों का सजीव चित्रण किया गया है। इन्हीं प्रसिद्ध कवियों में एक महाकवि भास भी है।

महाकवि भास संस्कृत के एक उत्कृष्ट नाटककार माने गये हैं जिनकी प्रशंसा महाकवि कालिदास, बाण, वाक्पतिराज, राजशेखर, जयदेव, दण्डी आदि संस्कृत कवियों द्वारा की गई है। संस्कृत साहित्य परम्परा में यह देखा जाता है कि कवि अथवा नाटककार आदि अपनी कृतियों में अपने विषय में कुछ नहीं कहते हैं। महाकवि भास भी अपनी कृतियों में स्वयं से सम्बन्धित निर्देश नहीं करते हैं। जहाँ कुछ अन्य कवियों ने अपने नाटकों की प्रस्तावना में अपना नाम, कृति आदि का उल्लेख किया है वहाँ भास ने वह भी छोड़ दिया है अतः इनके विषय से सम्बन्धित कोई प्रमाणित जानकारी नहीं प्राप्त होती है। भास के नाटकों में रमणीय कथानक, चरित्रों की गम्भीरता तथा भावनात्मक

संवेदनशीलता का अद्भुत समन्वय मिलता है। इनकी रचनाओं में तेरह नाटकों का नाम प्राप्त होता है जिसमें से एक है **स्वप्नवासवदत्तम्** । स्वप्नवासवदत्तम् महाकवि भास द्वारा रचित एक अपूर्व संस्कृत नाटक है जिसमें वासवदत्ता, राजा उदयन तथा पद्मावती के माध्यम से प्रेम, त्याग, संयम तथा राजनीति के समन्वय को दर्शाया गया है।

अंतर्द्वंद्व से अभिप्राय उस मानसिक संघर्ष से है जिसमें विविध भावनाएँ, इच्छाएँ तथा परिस्थतियाँ आदि परस्पर टकराती है। यह मन का वह आन्तरिक संघर्ष है जो व्यक्ति के दो विकल्पों के मध्य निर्णय न ले पाने के कारण उत्पन्न होता है। आन्तरिक इसलिए क्योंकि यह बाह्य नहीं है अथवा बाह्य रूप से नहीं दिखता अपितु यह व्यक्ति के स्वयं के विचारों के मध्य द्वंद्व है जो उसके व्यवहार में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। महाकवि भास प्रणीत स्वप्नवासवदत्तम् में यही अन्तर्द्वंद्व नाटक के नारी पात्रों-वासवदत्ता एवं पद्मावती के चरित्रों में अत्यन्त मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया गया है। उनका यह अन्तर्द्वंद्व एक सूक्ष्म तथा मनोवैज्ञानिक संघर्ष है।

वासवदत्ता का अन्तर्द्वंद्व उसके राजा उदयन के प्रति आघात प्रेम एवं राज्यहित हेतु स्वयं राजा उदयन का पद्मावती से विवाह कराने से उत्पन्न होता है। यहाँ स्पष्ट देखा जा सकता है कि किस प्रकार वासवदत्ता एक पत्नी एवं एक महारानी होने की भूमिका तथा अपने कर्तव्यों को भली भाँती समझती है तथा अपनी बुद्धि एवं मानसिक भावनाओं में समुचीत संतुलन स्थापित करती है। ऐसे अनेक प्रसङ्ग 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक में देखे जा सकते है जहाँ वासवदत्ता का यह अन्तर्द्वंद्व स्पष्ट रूप से सामने आता है।

वासवदत्ता के अन्तर्द्वंद्व का स्पष्टीकरण नाटक के प्रथम अङ्क में ही प्राप्त हो जाता है। जब रक्षकों द्वारा सामान्य जन में उनकी गणना करके धृष्टता के साथ उन्हें हटाया जा रहा है तब क्योंकि वासवदत्ता अवन्ति देश की राजकुमारी एवं राजा उदयन की पत्नी थी तो उनके लिए सम्भवत: यह प्रथमत: ही था तो उन्हें ये अपना अपमान अनुभव होता है। अपने हृदय के भाव को वह यौगन्धरायण के समक्ष **"तथा परिश्रमः परिखेदं नोत्पादयति यथायं परिभवः"**[1] कहकर व्यक्त भी करती है। बिन पहचाने तो देवताओं का तिरस्कार भी हो जाता है यौगन्धरायण के इस प्रकार समझाये जाने पर वासवदत्ता अपने मन को शान्त करने का प्रयास करती है। इस प्रसङ्ग से यह भी ज्ञात होता है कि वासवदत्ता आत्मसम्मान से युक्त स्त्री है। **"यथा यथा त्वरते तथा तथान्धीकरोति मे हृदयम्।"**[2]- राजा उदयन तथा पद्मावती के बन्धन संस्कार के समय वासवदत्ता के द्वारा कही गई यह पंक्ति उसकी भावनात्मक पीड़ा को दर्शाती है। जैसे-जैसे उदयन एवं पद्मावती के

[1] भास, स्वप्नवासवदत्तम्, अंक-1

[2] भास, स्वप्नवासवदत्तम्, अंक-2

विवाह का प्रसङ्ग समीप आ रहा है, वैसे-वैसे वासवदत्ता का हृदय व्याकुलता से परिपूरित हो रहा है। तथापि वासवदत्ता की यह गहन भावनात्मक पीड़ा उसके मनोबल एवं धैर्य को क्षीण नहीं कर पाती है।

तृतीय अङ्क में भी जब वासवदत्ता को पद्मावती के लिए विवाह-माला गूंथने का कार्य दिया जाता है तब भी वह मानसिक संघर्षरत है। वह विवाह – माला में वैधव्य का निवारण करने वाली औषध को तो गूंथती है किन्तु सौत का अभिभव करने वाली औषध को नहीं। एक ओर वासवदत्ता का उदयन के प्रति प्रेम और दूसरी ओर उसका इन कठिन परिस्थितियों का सामना करना उसके भाव-नियंत्रित चरित्र को प्रकट करता है। वासवदत्ता के ये संवाद उसके भीतर चल रहे अन्तर्द्वंद्व को स्पष्ट करते हुए उसके धैर्यशील एवं आत्मसंयमी व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करते हैं। इन परिस्थितियों के चलते उसका मन क्षणभर के लिए विचलित तो होता है किन्तु वह अपनी बुद्धि अथवा विवेक के साथ इनका सामना करती है। पञ्चम अङ्क में भी स्वप्न दृश्य के माध्यम से वासवदत्ता का अन्तर्द्वंद्व सामने आता है। राजा उदयन को निद्रा में देखकर वासवदत्ता अपनी इच्छा व्यक्त करती है- **"यावन्मुहुर्तकं स्थित्वा दृष्टिं हृदयं च तोषयामि"**[3] । अर्थात् वह कुछ क्षणभर ठहरकर राजा उदयन को देखकर अपने हृदय को सन्तुष्ट करना चाहती है किन्तु यौगन्धरायण की योजना के विफल होने के भय से वह बहुत देर भी नहीं ठहर सकती थी।

दूसरी ओर 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक की दूसरी मुख्य नायिका पद्मावती का अन्तर्द्वंद्व उसकी आत्मस्वीकृति अथवा आत्मबोध से जुड़ा हुआ है। पद्मावती का स्वभाव सहृदयता से परिपूर्ण है तथा नारी-सुलभ ईर्ष्या का अभाव भी उसमें स्पष्ट देखा जा सकता है। पद्मावती को राजा उदयन के हृदय में वासवदत्ता के प्रति प्रेम का ज्ञान होता है तब यद्यपि वह सामने अपनी पीड़ा व्यक्त नहीं करती है किन्तु अपने पति का उसकी पहली पत्नी के प्रति प्रेम को देखकर भला किस नारी का मन पीड़ा से ग्रसित नहीं होता है। किन्तु वासवदत्ता के प्रति स्नेह रखते हुए राजा उदयन को भी वह दोष नहीं देती है। नाटक के चतुर्थ अङ्क में जब पद्मावती की दासी राजा उदयन को पद्मावती की अपेक्षा वासवदत्ता पर अधिक स्नेह करने के कारण अनुदार कह देती है तो दासी को रोकते हुए पद्मावती तुरन्त ही कहती है-

"हला! मा मैवम् ! सदाक्षिण्य एवार्यपुत्रः य इदानीमायार्थया वासवदत्ताया गुणान् स्मरति।"[4]

[3] भास, स्वप्नवासवदत्तम्, अंक-5

[4] भास, स्वप्नवासवदत्तम्, अंक-4

राजा उदयन के वासवदत्ता में आसक्त हृदय को देखकर भी पद्मावती के मन में वासवदत्ता के प्रति कोई ईर्ष्या अथवा असद् विचार नहीं उत्पन्न होते हैं। वासवदत्ता के प्रति अपने आदर भाव को प्रकट करते हुए पद्मावती जब भी वासवदत्ता का नाम लेती है, तो उसके नाम के आगे 'आर्या' शब्द का व्यवहार अवश्य ही करती है। नाटक के अन्तिम अङ्क में वासवदत्ता के प्रकट होने पर पद्मावती अपने सहज स्नेह तथा वासवदत्ता के प्रति ईर्ष्या-शून्यता का परिचय देते हुए वह वासवदत्ता के चरणों पर गिर कर क्षमा याचना भी करती है।

भास प्रणीत 'स्वप्नवासवदत्तम्' में वासवदत्ता एवं पद्मावती दोनों नारी पात्रों का अन्तर्द्वंद्व यह सिद्ध करता है कि यह मानसिक संघर्ष उनकी दुर्बलता का प्रतीक नहीं अपितु उनके धैर्य, त्याग, विवेक तथा उनके आत्मसंयम का घोतक है। एक स्त्री त्याग कर रही है, स्वयं अपने पति से अत्यन्त प्रेम करते हुए भी वह राज्यहित के लिए उसके दूसरे विवाह में अपना सहयोग दे रही है और दूसरी स्त्री, अपने पति के हृदय में पहली पत्नी के प्रति स्नेह को जानते हुए भी ईर्ष्या-भाव से युक्त नहीं है। भारतीय संस्कृति में नारी की उदारता का यह अपूर्व उद्धरण यहाँ प्राप्त होता है। अतः राजा उदयन यदि अपना राज्य पुनः प्राप्त कर सके तो वह केवल वासवदत्ता एवं पद्मावती के सहयोग के कारण ही । पुरुष नारी शक्ति के अभाव में कुछ भी करने में समर्थ नहीं है। वासवदत्ता के त्याग एवं धैर्य तथा पद्मावती के सहज स्वभाव के कारण ही उदयन राज्य पुनः प्राप्त कर पाता है। वह दोनों ही परिस्थतियों के अनुकूल व्यवहार करते हुए अपनी विवेकशीलता का कुशलतापूर्वक प्रदर्शन करती हैं तथा अपनी बुद्धि एवं संयम से प्रेम, कर्तव्य तथा राज्यहित के मध्य संतुलन स्थापित करती हैं।

सन्दर्भ सूची:-

- भास, *स्वप्नवासवदत्तम्* । सम्पा० जयपाल विद्यालंकार। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
- भास, *स्वप्नवासवदत्तम्* । सम्पा० धर्मेन्द्रकुमार गुप्त। दिल्ली: मेहरचन्द लछमनदास। 1975।
- भास, *स्वप्नवासवदत्तम्* । सम्पा० डॉ० रूपनारायण त्रिपाठी। जयपुर: हंसा प्रकाशन। 1988।
- राधावल्लभ त्रिपाठी, *संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श*। दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ। 2012।

- पं. चन्द्रशेखर उपाध्याय, *भास के नाटक- भाग-3*। दिल्ली: नाग पब्लिशर्स।
- डॉ० उषा चौहान, *भास, कालिदास और भवभूति के रूपकों के प्रमुख नारी पात्र*। दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स। 2021।
- डॉ० पुष्पा गुप्ता, *संस्कृत साहित्य – विविध आयाम*। दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स। 2012
- डॉ० केशवराव मुसलगाँवकर, *संस्कृत नाट्यमीमांसा*। सम्पा० डॉ० राजेश्वरशास्त्री मुसललगाँवकर। दिल्ली: परिमल पब्लिकेशन्स।
- डॉ० श्रीमती लक्ष्मी शुक्ला, *भारतीय मनोविज्ञान*। दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स। 2009।
- डॉ० जे. डी. शर्मा, *सामान्य मनोविज्ञान*। दिल्ली: लक्ष्मीनारायण अग्रवाल। 1980।
- Renuka Panchal. *Analysis of Emotional Conflicts of Vāsavadattā in Svapnavāsavdattam of Bhāsa with Reference to Modern Theories of Emotions*. Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ), Vol. XII, issue 11, June 2024.
- Mrs. Sampa Paul. *Bhasa's Svapnavasavadattam (The Vision of Vasavadatta): A Thematic Study.* Language in India, Vol.19:7, July 2019.